द्वितीय अध्याय

हिंदी के प्रमुख किसानी उपन्यास

उपन्यास में मानव जीवन को समीप से देखकर उन्हें व्यक्त करने की क्षमता होती है, इसी कारण इसे उपन्यास की संज्ञा दी गयी है। उपन्यास में लेखक मनुष्य जीवन की घटनाओं को अपने कल्पना के अनुसार प्रस्तुत करता है चूंकि वह स्वयं भी इस समाज में रह रहा होता है, इसलिए वह इन घटनाओं का यथार्थ चित्रण कुछ काल्पनिक आधार पर करता है। हिन्दी साहित्य में उपन्यास विधा का महत्व इसलिए भी अधिक रहा है कि जिस तरह से मानव जीवन का समग्र चित्रण उपन्यास में हो सकता है उस तरह से साहित्य की अन्य विधाओं में नहीं हो सकता है। इस संबंध में रॉल्फ फॉक्स का कथन है- ''मनुष्य के जीवन को सर्वांगीण रूप में जितना उपन्यास चित्रित कर सकता है उतना साहित्य का दूसरा अंग नहीं कर सकता।''[1]

साहित्य में उपन्यास की तुलना महाकाव्य से की जाती है क्योंकि उपन्यास की ही भांति महाकाव्य में भी समाज एवं मावन जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला जाता है, किन्तु काव्य या कविता का पक्ष भावनात्मक होता है उसे पढ़कर आनंद की प्राप्ति तो होती है किन्तु उसकी अपनी सीमाएं होती हैं। इसके अतिरिक्त कविता की अभिव्यक्ति का माध्यम पद्य है और उपन्यास गद्य विधा है, इसलिए इसमें जीवन के विविध पक्षों की अभिव्यक्ति ठीक प्रकार से हो सकती है। आचार्य रामचन्द शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में लिखा है- ''वर्तमान जगत में उपन्यासों की बड़ी शक्ति है। समाज जो रूप पकड़ रहा है, उसके भिन्न-भिन्न वर्गो में जो प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हो रही हैं, उपन्यास उनका विस्तृत प्रत्यक्षीकरण ही नहीं करते, आवश्यकतानुसार उसके ठीक विन्यास सुधार अथवा निराकरण की प्रवृत्ति भी उत्पन्न करते हैं।''[2]

उपन्यास का उदय यूरोप में 15वीं शताब्दी के पूर्व ही हो चुका था, किन्तु भारत में उपन्यास साहित्य का आगमन औपनिवेशिक काल के बाद हुआ। यूरोप से उपन्यास साहित्य भारत में सर्वप्रथम बंगला भाषा में आया इसके पश्चात मराठी भाषा में उपन्यास लेखन आरंभ हुआ। हिंदी साहित्य में उपन्यास लेखन बंगला भाषा के बाद प्रारंभ होता है। इस प्रकार हम मान सकते हैं कि भारत में उपन्यास साहित्य पश्चिमी सभ्यता की ही देन है।

2.1 हिन्दी के प्रमुख किसानी उपन्यास

हिंदी साहित्य में उपन्यास विधा एक ऐसी विधा है जो मानव जीवन के हर पहलू पर विस्तारपूर्वक चर्चा करता है। इन्हीं पहलुओं में से एक किसानों एवं खेतिहर मजदूर भी हैं जिनकी समस्याओं पर उपन्यास लेखन के शुरुआती दौर से ही बात की जाती रही है। किंतु यदि हम विभिन्न दौर के उपन्यासों पर गौर करें तो किसानों की समस्याएं अलग-अलग रूप में हमारे सामने आती हैं।

2.1.1 स्वतंत्रता से पूर्व किसानी उपन्यास

यह समय हिन्दी साहित्य में उपन्यास का प्रांरभिक युग था। इसमें उपन्यास अपनी आरंभिक अवस्था में था जिससे हमें इस समय के उपन्यासों में वास्तविक रूप में सामाजिक समस्याओं का चित्रण नहीं मिलता। किन्तु इसी युग में कुछ ऐसे उपन्याकार भी थे जिन्होंने उस समय के समाज में व्याप्त परिस्थितियों जैसे विधवा, पर्नुविवाह, स्त्री शिक्षा पर बल देना, बाल विवाह का विरोध, किसानों और मजदूरों के शोषण का विरोध आदि विषयों पर भी उपन्यास लिखें किन्तु हमें इस प्रकार के उपन्यासकारों की संख्या इस युग में अत्यंत सीमित मात्रा में मिलती है। इसी युग में किसानों की समस्या को आधार बनाकर कुछ उपन्यासकारों ने उपन्यास रचना की। गोपाल राय के अनुसार- ‘‘इस अवधि का उपन्यास देश के उस विशाल जनसमुदाय से कटा हुआ है जो ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के शोषण चक्र में पिस रहा था। यह जनसमुदाय किसानों का था, जो मुख्यतः गाँवों में रहता था और विदेशी सरकार, जमींदार, महाजन और पुरोहित सबका भक्ष्य बना हुआ था। किशोरीलाल गोस्वामी, भुवनेश्वर मिश्र, मेहता

लज्जाराम शर्मा आदि कुछ उपन्यासकारों ने किसानों पर जमींदारों के अत्याचार, ग्रामीणों की निर्धनता, अशिक्षा तथा उनकी दीनहीन स्थिति का यत्र- तत्र चित्रण किया है, किन्तु यथार्थ के इस ज्वलन्त पक्ष पर उनकी सर्जनात्मक दृष्टि नहीं पड़ी है।''[3]

क) गुप्त बैरी : बालकृष्ण भट्ट

इस उपन्यास की रचना 1882 ई. में हुई। इस उपन्यास की रचना बालकृष्ण भट्ट ने एक जमींदार की जीवन शैली को आधार बनाकर किया है।

ख) अंगूठी का नगीना : किशोरीलाल गोस्वामी

इन्होंने इस उपन्यास की रचना 1918 ई. में की। इस उपन्यास में राजा कन्दर्पमोहन और राय रामप्रकाश मिश्र के रूप में जमींदारों के पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन का वास्तविक चित्र प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास में जमींदार और किसानों के आपसी संबंध को बखूबी प्रस्तुत किया गया है। जमींदार किसानों से किस तरह से लगान वसूल करते हैं, इसका भी उल्लेख उपन्यास में भली-भाँति किया गया है। गोपाल राय के शब्दों में- "फसल हो या न हो, रैयत के घर में चाहे अनाज का एक दाना भी न हो, पर उसे मालगुजारी देनी ही पड़ती थी जो आसामी प्यादों के बुलावे पर जमींदार की कचहरी में हाजिर नहीं होता था, उसे घसीटकर लाया जाता था, उस पर तरह-तरह के अत्याचार किये जाते थे और उसके घर के बैल बछिए, चौखट किवाड़ तक जब्त कर लिये जाते थे।"[4] किसानों की स्थिति कैसी भी हो उसे जमींदारों को लगान देना ही पड़ता था। एक तरफ जहाँ किसान दाने-दाने को मोहताज होते हैं, वहीं दूसरी तरफ जमींदारों के शान-शौकत देखने योग्य होती है।

ग) बलवंत भूमिहार : भुवनेश्वर प्रसाद मिश्र

यह उपन्यास 19वीं सदी का श्रेष्ठ उपन्यास है। इस उपन्यास में दो जमींदार परिवारों के संघर्ष की कहानी है। इस उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार ने उत्तरी बिहार के जमींदारों की सामाजिक,

पारिवारिक, जमींदारी प्रथा का चित्रण प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में भी जमींदारों का किसानों के प्रति उनकी कठोरता, लगान वसूली आदि का उल्लेख मिलता है। गोपालराय के अनुसार- ''इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य जैसा भूमिका में कहा गया है, तत्कालीन भूमिहार जमींदार समाज का चित्र प्रस्तुत करना है, और जो चित्र प्रस्तुत किया गया है वह सच्चा और मार्मिक है।''[5] यह उपन्यास उस समय लिखे जाने वाले अन्य उपन्यासों से पूर्णतः भिन्न है। वैसे तो यह उपन्यास भी अपने निष्कर्ष रूप में आदर्श समाज की स्थापना की शिक्षा देता है किन्तु जमींदार और किसानों की समस्याओं का जो चित्र यह उपन्यास प्रस्तुत करता है वैसा बालकृष्ण भट्ट और किशोरीलाल गोस्वामी के उपन्यासों में नहीं देखने को मिलता है।

घ) हिन्दू गृहस्थ : मेहता लज्जाराम शर्मा

इस उपन्यास की मूल समस्या कर्ज की समस्या है। उपन्यास में किसानों को नए ढंग की खेती करने पर जोर दिया गया है। किसानों के कर्ज संबंधी समस्या का उल्लेख भी मिलता है। जमींदारों के अत्याचार और शोषण के कारण ही किसान कर्ज के जाल में फंसे हुए हैं।

स्वतंत्रता से पूर्व उपन्यासों में किसान जीवन की समस्याओं चित्रण तो मिलता है किन्तु उनकी संख्या सीमित मात्रा में ही है। प्रेमचंद के आगमन के पश्चात ही हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उपन्यास को एक निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति हुई। उन्होंने समाज के उस वर्ग को अपने उपन्यासों में स्थान दिया जो अपेक्षित रहे हैं और जिनका शोषण होता रहा है। इस वर्ग में स्त्रियाँ, किसान मजदूर, मिल मजदूर आदि आते थे जिनकी दुर्दशा के लिए ब्रिटिश शासन सर्वाधिक उत्तरदायी था। उस समय भारत में औपनिवेशिक शासन था। अंग्रेज किसानों से उनकी फसल के पैदावार से ज्यादा लगान वसूली करते थे। कृषकों की लगान वसूली की दुर्दशा का वर्णन प्रेमचंद ने इन शब्दों में किया है- "भारतीय किसानों की इस समय जैसी दशा है उसे कोई शब्दों में अंकित नहीं कर सकता। उनकी दुर्दशा को वे स्वयं जानते हैं, या उनका भगवान जानता है। जमींदार को समय पर मालगुजारी चाहिए, सरकार को समय पर लगान चाहिए, खाने के लिए दो मुट्ठी अन्न चाहिए, पहनने के लिए एक चीथड़ा चाहिए, चाहिए सब कुछ, पर एक ओर तुषार और

अतिवृष्टि फसल को चौपट कर रही है....दूसरी तरफ रोग, प्लेग, हैजा, शीतला उनके नौजवानों को हरी-भरी तथा लहलहाती जवानी में उसी तरह दुनिया से उठाए लिए चली जा रही है जिस तरह लहलहाता खेत अभी छ: दिन पूर्व के पत्थर-पाले से जल गया ।"[6] समाज के बड़े किसान नेता पढ़े-लिखे लोग भी उन्हीं अंग्रेजों के समर्थक होते थे । प्रेमचंद ने समाज में शोषण के शिकार इन्हीं किसानों मजदूरों को अपने उपन्यासों में स्थान दिया और हिन्दी जगत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार का स्थान प्राप्त किया ।

ङ) खरा-सोना : जगदीश झा बिमल

इस उपन्यास की रचना जगदीश जी द्वारा 1921 में किया गया । यह उपन्यास किसान जीवन पर आधारित है । जमींदारों का किसानों पर अत्याचार उपन्यास में प्रमुख रूप से उभरकर सामने आया है । किसानों के साथ-साथ मजदूरों की समस्याओं पर भी प्रकाश डाला गया है। उपन्यास में किसान एवं मजदूर जमींदारों का विरोध तो करते हैं किंतु उनके विरोध को जमींदारों द्वारा दबा दिया जाता है । मजदूरों के विरोध को मिलमालिकों से सुलह कराकर रोक दिया जाता है। कुल मिलाकर उपन्यास में किसानों, मजदूरों एवं जमींदारों के आपसी टकराव को दर्शाया गया है ।

च) प्रेमाश्रम : प्रेमचंद

इस उपन्यास की रचना प्रेमचंद ने 1922 ई. में किया । इस उपन्यास की रचना प्रेमचंद ने उत्तर प्रदेश के लखनपुर नामक गाँव के किसानों को आधार बनाकर किया है। उपन्यास में प्रभाशंकर जो कि पुराने किस्म के जमींदार हैं जो किसानों से लगान वसूली करते हैं और बेगार भी कराते हैं, किन्तु उनके व्यवहार में किसानों के प्रति कुछ विनम्रता का भाव भी है । वे किसानों की फसल अच्छी न होने पर लगान में छूट भी देते हैं । उनके घरेलू कामकाज में किसानों की सहायता भी करते हैं । उनके इसी व्यवहार से प्रभांशकर और किसानों का तालमेल बना हुआ है किन्तु उनका भतीजा ज्ञानशंकर जिसके मन में किसानों के लिए कोई दयाभाव नहीं है, वह किसानों से मनमाने तरीके से लगान वसूलना चाहता है उनसे बेगार कराना चाहता है जिससे उस गाँव के किसान उसका विरोध करने लगते हैं, किन्तु वे उससे हार जाते हैं । किसानों

के विरोध प्रदर्शन को तो प्रेमचंद ने दिखाया है किंतु मुखर रूप में नहीं। उस समय की परिस्थितियां ऐसी थीं कि किसान अंग्रेजी शासन के क़दमों तले दबा हुआ था। किसान चाहकर भी खुले रूप में उनका विरोध नहीं कर सकते थे। शायद इसीलिए प्रेमचंद ने 'प्रेमाश्रम' में किसानों के विरोध को पूरी तरह से नहीं दिखाया है। इस संबंध में सुरेन्द्र चौधरी का कथन है- " प्रेमाश्रम में किसान -संघर्ष थोड़ा उभरने के बजाय यहां दब गया है। इस उतार-चढ़ाव की अपनी विशेष परिस्थितियां हैं।"[7] ज्ञानशंकर का बड़ा भाई प्रेमशंकर अपने चाचा प्रभाशंकर के विचारों का समर्थक है वह भी किसानों के प्रति विनम्र हैं। किन्तु उपन्यास में प्रेमचंद का लक्ष्य ज्ञानशंकर के माध्यम से तत्कालीन समाज में जमींदार वर्ग का किसानों के प्रति शोषण को दर्शाना है जैसा कि उपन्यास के बारे में रामविलास शर्मा का कथन है-"न तो इसमें कोई एक व्यक्ति नायक है और न ही ज्ञानशंकर के सारे खलनायकत्व के बावजूद, कोई एक व्यक्ति इसका खलनायक है... एक ओर लखनपुर के गाँव के किसान हैं, विकसित होती अपनी प्रतिरोध और संघर्ष क्षमता के साथ और दूसरी ओर ज्ञानशंकर के साथ उसका समूचा दमन-तंत्र है। लखनपुर के किसान ही सामूहिक रूप में प्रेमाश्रम के नायक हैं और अपनी पूरी शक्ति के साथ भारत में औपनिवेशिक व्यवस्था को सहायता पहुँचाता ज्ञानशंकर और उसका समूचा तंत्र ही 'प्रेमाश्रम' का खलनायक है। अपने सारे अवास्तविक और यूरोपियन निष्कर्षों के बावजूद 'प्रेमाश्रम' का वास्तविक महत्व जैसा कि रामविलास शर्मा जी लिखते हैं, इसलिए है- 'प्रेमचंद की कला इस बात में है कि वे हिंदुस्तान के बदले हुए किसान का चित्र खींच सके हैं।''[8]

छ) रंगभूमि : प्रेमचंद

यह उपन्यास देश में विदेशी शासन के दौर का उपन्यास है। जिसका प्रमुख पात्र सूरदास गाँधीवादी विचारों का पोषक है अपने जमीन के एक टुकड़े को बचाने के लिए गोलियों का शिकार हो जाता है। सूरदास शांत तरीके से बिना हिंसा के अपनी लड़ाई लड़ता है। देश में उस समय स्वतंत्रता आंदोलन शिथिल पड़ गया था। सूरदास प्रेमचंद के उपन्यास का जुझारू नायक है। नामवर सिंह के अनुसार- "सूरदास प्रेमचंद का सबसे लड़ाकू नायक है। यह 'हीरो' तब सामने आया, जब राष्ट्रीय आंदोलन उतार

पर था, पस्ती पर था, मंदी पर था। प्रेमचंद ने कहा था कि साहित्य वह मशाल है जो राजनीति के आगे चलती है।"[9]

ज) कसौटी : विश्वनाथ सिंह शर्मा

यह उपन्यास 1929 के दौर का है जब देश में जमींदारी प्रथा व्याप्त थी। जमींदार किसानों पर तरह-तरह के अत्याचार करते थे। समाज में जिन अधिकारियों को जनता की रक्षा के लिए नियुक्त किया गया है वे भी किसानों एवं मजदूरों पर तरह-तरह के अत्याचार करते हैं। उपन्यास में युवाओं की जागरूकता का बखान भी किया गया है। युवा वर्ग ही मजदूरों पर हो रहे अत्याचार का विरोध करने के लिए 'मजदूर संघ' की स्थापना करते हैं। इस प्रकार यह उपन्यास भी गरीब किसानों एवं मजदूरों के जमींदारों द्वारा शोषण की कहानी बयां करता है।

झ) कर्मभूमि : प्रेमचंद

यह उपन्यास जमींदारों के शोषण पर आधारित है। प्रेमचंद ने 1932 में इस उपन्यास की रचना की, उस समय देश में सविनय अवज्ञा आंदोलन चल रहा था। 'कर्मभूमि' में उन्होंने किसानों एवं मजदूरों के आंदोलन को दिखाया है। उपन्यास का प्रमुख पात्र अमरकान्त समाज सेवी व्यक्ति है। वह जिस गाँव में समाज सेवा के लिए जाता है वहाँ के किसान एक महन्त जी, जो कि वहाँ के जमींदार हैं उनके शोषण के शिकार है। अमरकान्त उनके शोषण के विरोध में आन्दोलन करता है, जेल जाता है किन्तु उसका आन्दोलन सफल होता है और लगान वसूली की प्रक्रिया बंद कर दी जाती है। रामविलास के अनुसार- "प्रेमचंद ने 'कर्मभूमि' में पहली बार मजदूरों और विद्यार्थियों को एक साथ अंग्रेजों का मुकाबला करते दिखाया है। जैसा कि सभी लोग जानते हैं, इसके बाद भी नौजवानों ने अनेक बार मजदूरों और किसानों के साथ मिलकर अंग्रेजों का मुकाबला किया था। प्रेमचंद ने राष्ट्रीय आंदोलन की एक महत्वपूर्ण कड़ी को पकड़ा था और उसका यहाँ चित्रमय वर्णन किया है।"[10]

ञ) अलका : निराला

इस उपन्यास की रचना निराला जी ने 1933 ई. में अवध के किसानों की स्थिति को आधार बनाकर किया। उपन्यास में जनसाधारण एवं किसानों की दयनीय स्थिति का चित्रण किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने उपन्यास में किसानों का जमींदारों के प्रति बगावत का भी यथार्थ वर्णन किया है। समाज के बड़े-बड़े नेताओं का साथ न पाने के बावजूद किसान अपने अधिकार के प्रति सजग दिखाई देते हैं।

ट) तितली : जयशंकर प्रसाद

इस उपन्यास में ब्रिटिश राज में किसानों एवं मजदूरों के संघर्षो पर प्रकाश डाला गया है। 1934 में रचे गए इस उपन्यास में किसानों एवं जमींदारों के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई है। ग्रामीण जीवन की सुंदर अभिव्यक्ति के साथ-साथ जमींदारों के किसान एवं मजदूरों पर होने वाले अत्याचार का चित्रण मिलता है। उपन्यास में जमींदार किसानों की भूमि को हड़पने की योजना बनाते रहते हैं इन सब में तहसीलदार और महंत जमींदारों की भरपूर मदद करता है।

ठ) गोदान : प्रेमचंद

हिन्दी साहित्य के किसान जीवन की गाथा का यह सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इसकी रचना प्रेमचंद ने 1936 में किया था। उपन्यास का मुख्य पात्र होरी अपनी थोड़ी सी जमीन से अपने परिवार का भरण-पोषण करने की कोशिश करता है। उसकी एक छोटी सी इच्छा है गाय पालने की। वह किसी तरह से गाय खरीदता भी है किन्तु इसी के साथ उसके सामने समस्याओं और विपत्तियों का पहाड़ सा टूट पड़ता है। अपने जीवन भर वह इन्हीं समस्याओं से जूझता रहता है। उसकी जमीन भी उससे छिन जाती है। वह किसान से मजदूर बन जाता है। होरी के माध्यम से प्रेमचंद एक किसान के किसान से मजदूर बनने की समस्त घटना का मार्मिक दृश्य प्रस्तुत करते हैं। रामदरश मिश्र के अनुसार- "होरी अपने जीवन के अतिंम दिनों में किसान छोड़कर मजदूर बन जाता है। अब पंडित दातादीन और होरी के सम्बन्ध सामन्ती नहीं

रहे, वे मालिक और मजदूर बन जाते हैं। होरी का बेटा गाँव छोड़कर शहर जाता है कमाने के लिए वह वहाँ मजदूर बनता है। विस्थापित किसान मजदूर के रूप में स्थापित हो रहा है।"[11] प्रेमचंद ने जब गोदान उपन्यास की रचना की तब देश में जमींदारी प्रथा के अंत का समय नजदीक था। जमींदार सीधे तौर पर किसानों का शोषण नहीं करते थे। रायसाहब को ही देखा जाय तो वे होरी जैसे किसानों के जज्बात का फायदा उठाते हैं। उसे तो लगता है कि रायसाहब बहुत ही दयालु इंसान हैं किंतु रायसाहब अपनी चालाकियों से किसानों को छलते हैं। भोले-भाले किसानों को उनकी चाल समझ नहीं आती। वे किसानों के सामने अपने आपको भी मजबूर दिखाते हैं। जबकि उनकी वास्तविकता कुछ और ही है। रामविलास शर्मा के अनुसार- "गोदान में किसानों के शोषण का दूसरा ही रूप है। यहाँ सीधे-सीधे रायसाहब के कारिंदे होरी का घर लूटने नहीं पहुँचते। लेकिन उनका घर जरूर लुट जाता है। यहाँ अंग्रेजी राज के कचहरी-कानून सीधे-सीधे उसकी जमीन छीनने नहीं पहुँचते। लेकिन जमीन छिन जरूर जाती है। होरी के विरोधी बड़े सतर्क हैं। वे ऐसा काम करने में झिझकते हैं जिससे होरी दस-पांच को इकट्ठा करके उनका मुकाबला करने पहुँच जाए। वह उनके चंगुल में फंसकर तिल-तिल कर मरता है लेकिन समझ नहीं पाता कि यह सब क्यों हो रहा है।"[12] होरी के रूप में प्रेमचंद ने जिस भारतीय किसान का चित्र प्रस्तुत किया है, वह एक संघर्षशील भारतीय किसान है। वह जीवन भर अपनी कठिनाइयों से लड़ता रहता है किंतु हार नहीं मानता है।

ड) गरीब : जगदीश झा बिमल

1941ई. में रचित इस उपन्यास कथावस्तु जमींदारों द्वारा किसानों के शोषण पर आधारित है। जमींदार किसानों का शोषण करने के साथ-साथ उनकी स्त्रियों पर भी अपना अधिकार जमाये हुए हैं। वे किसानों की जमीनों को छल-प्रपंच से हड़प कर उन पर अपना कब्ज़ा जमा लेते हैं। उपन्यास में प्रशासन विभाग की सच्चाइयों पर भी प्रकाश डाला गया है।

ढ) कमला : रामचंद्र तिवारी

इस उपन्यास की रचना का परिवेश उत्तर भारत का एक गाँव है। उपन्यास की रचना 1943 में की गई, जिसमें गरीब, साधनहीन, अशिक्षित एवं पीड़ित किसानों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है। किसानों के जीवन के विभिन्न पक्ष जैसे-उनके आचार, व्यवहार, रहन-सहन, उनकी आकांक्षाओं आदि के साथ-साथ ग्रामीण जीवन के विभिन्न पक्षों का यथार्थ वर्णन किया गया है।

अतः हमें यह देखने को मिलता है कि स्वतंत्रता से पूर्व किसानों की समस्याओं को लेकर प्रर्याप्त मात्रा में उपन्यासों की रचना हुई है। प्रेमचंद के आगमन से हिन्दी उपन्यास को नई दिशा मिली एवं उनके बाद आने वाले उपन्यासकारों के लिए प्रेमचंद एक प्रेरणास्रोत बने।

2.1.2 स्वातंत्र्योत्तर किसानी उपन्यास

इस समय के उपन्यास साहित्य में हिन्दी उपन्यासों की कई धाराएँ बंट गयी। लेकिन किसानों की समस्या को लेकर इस समय भी पर्याप्त उपन्यास लेखन हुआ। किसानों की जो समस्याएं स्वतंत्रता से पूर्व में थीं वही समस्याएं हमें स्वातंत्रयोत्तर उपन्यासों में भी देखने को मिलती हैं।

क) रतिनाथ की चाची : नागार्जुन

जमींदारों द्वारा किसानों के शोषण को इस उपन्यास की विषयवस्तु बनाया गया है। जमींदार किसानों को कृषि करने के लिए भूमि देते हैं बदले में उनसे बेगार करवाते हैं। किसान या मजदूर जो एक बार जमींदार से कर्ज ले लेते हैं तो बदले में उनको जीवनभर के लिए उनका बंधक बनना पड़ता है। किसानों एवं मजदूरों की किसी भी अपराध की सजा के रूप में जमींदार उनको भूमि से बेदखल कर देते हैं। किसान जमींदार के शोषण का शिकार तो होते हैं किंतु वे उनके खिलाफ विरोध प्रदर्शन भी करते हैं।

ख) गंगा मैया : भैरवप्रसाद गुप्त

इस उपन्यास की रचना 1952 हुई। उपन्यास में ग्रामीण समाज के अभावग्रस्त जीवन एवं उनके आपसी मतभेद को बखूबी निखारा गया है। गाँव के लोग खुद ही एक दूसरे के दुश्मन बने बैठे हुए हैं। किसान आपस में एक दूसरे का नुकसान करने पर तुले होते हैं। जमींदारों के हितैषियों के रूप में प्रशासन को प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास में मटरू सिंह पहलवान को एक साहसी किसान नेता के प्रतीक के रूप में दिखाया गया है, जिसके नेतृत्व में किसान एवं मजदूर अपने हक की लड़ाई लड़ते हैं।

ग) बलचनमा : नागार्जुन

इस उपन्यास की रचना नागार्जुन ने 1952 में किया। यह उपन्यास किसानों एवं मजदूरों के शोषण की कहानी पर आधारित है। गोपालराय के अनुसार- ''बलचनमा एक ऐसे परिवार का सदस्य है, जिसमें सब के सब मजदूर ही हैं। उसकी माँ और बहन, और बचपन से ही वह खुद, जमींदार के यहाँ खवासी करते हैं।''[13] नागार्जुन ने उपन्यास में मजदूर परिवार की स्त्रियों का जमींदारों द्वारा शोषण का वर्णन भी करते हैं। बलचनमा और उसका परिवार जीवन भर मजदूरी करते हैं एवं जमींदारों के शोषण का शिकार होते रहते हैं, इसके बावजूद यही बलचनमा जमींदारों के खिलाफ लड़ाई लड़ने के लिए भी तत्पर दिखाई देता है।

घ) बाबा बटेसरनाथ : नागार्जुन

1954, में रचे गए इस उपन्यास में किसानों की शोषण की कहानी देखने को मिलती है। किसान एक लंबे समय से गरीबी एवं जहालत का जीवन जीने पर मजबूर हैं। उपन्यास में औपनिवेशिक काल में कृषकों की दुर्दशा, जमींदारी अत्याचार, सरकारी कर्मचारियों का अत्याचार, निर्धनता, अकाल, भुखमरी, बाढ़ एवं उससे किसानों की दुर्दशा का यथार्थ चित्रण किया गया है। एक तरह से यह उपन्यास 'बलचनमा'

का पूरक कहा जाता है क्योंकि 'बलचनमा' उपन्यास तत्कालीन समाज के चित्र को प्रस्तुत करता है और 'बाबा बटेसरनाथ' अतीत के चित्र को प्रस्तुत करता है।

ङ) मैला आँचल : फणीश्वरनाथ रेणु

इस उपन्यास में भी हमें किसानों की अनेकों समस्याएँ देखने को मिलती हैं। जमींदार उनका निर्दयतापूर्वक शोषण करते हैं यहाँ तक कि जो किसान धनी हैं वो भी गरीब किसानों का शोषण करने से नहीं चूकते हैं। गोपालराय के अनुसार- ''मेरीगंज की सारी धरती दो-तीन आदमियों के अधिकार में है। शेष ग्रामीण या तो खेतिहर मजदूर हैं या बटाईदारी पर खेती करते हैं। उन्हें भरपेट भोजन और तन ढंकने को कपड़ा तक नहीं मिलता और आवास के नाम पर फूस की झोपड़ी में उनकी सारी जिंदगी कट जाती है।''[14]

च) हाथी के दाँत : अमृत राय

यह उपन्यास अपने समय के किसानों की दशा को दर्शाता है। उपन्यास की रचना 1956 में हुई जब भारत स्वतंत्र हो गया था, किंतु यह स्वतंत्रता भारतीय किसानों के जीवन में कोई परिवर्तन नहीं कर सकी। स्वतंत्रता के बाद कांग्रेसी बड़े-बड़े पदों पर बैठ गए जिनका उद्देश्य ही अपना स्वार्थ सिद्ध करना था। राजनीतिक सहायता से जमींदारों की शक्ति और भी मजबूत होने लगी जिससे वे और भी तत्परता से किसानों को अपने शोषण का शिकार बनाने लगें।

छ) परती परिकथा : फणीश्वरनाथ रेणु

इस उपन्यास की रचना रेणु जी ने 1957 में की। उपन्यास अंचल विशेष को केंद्र में रखकर लिखा गया है, जिसमें पिछड़ी मानसिकता के ग्रामवासियों की कहानी मिलती है। गाँव के किसानों एवं मजदूरों की दरिद्रता को दूर करने के लिए एवं वहां की धरती को हरा-भरा बनाने के लिए जितेन्द्र नामक युवक संघर्षरत है। जितेन्द्र के प्रयासों के कारण ही गाँव के किसानों को सिंचाई के लिए कोसी नदी घाटी

परियोजना को अमल में लाने का कार्यक्रम बनाया जाता है, जिससे गाँव की हजारों एकड़ परती जमीन को खेती के योग्य बनाने का भी लक्ष्य प्राप्त हो सकता है।

ज) लोहे के पंख : हिमांशु श्रीवास्तव

इस उपन्यास की रचना 1957 में हुई। इसमें एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो खेतिहर मजदूर से किसान बनने का सपना देखता है। किंतु उसका यह सपना भी नहीं पूरा हो पाता है, अपनी मजबूरियों के कारण वह मिल मजदूर बन जाता है, और फिर मिल मजदूर के पश्चात रिक्शा चालक बनने पर मजबूर होता है।

झ) सती मैया का चौरा : भैरवप्रसाद गुप्त

इस उपन्यास में लेखक ने मुख्य रूप से किसानों के संघर्ष को दिखाया है। 1959 में रचित इस उपन्यास में मजदूरों के हड़ताल की चर्चा भी की गई है। सबसे बड़ी बात उपन्यास की यह है कि किसान एवं मजदूर अपने शोषण के खिलाफ लड़ाई में सफल भी होते हैं। इस उपन्यास में यह भलीभांति पता चलता है कि किसान एवं मजदूरों में यह चेतना आ गई है कि वे अपने अधिकारों को लेकर सजग हैं।

ञ) नदी बह चली : हिमांशु श्रीवास्तव

इस उपन्यास खेतिहर मजदूरों की समस्याओं को केंद्र में रखकर की गई है। उपन्यास का रचना वर्ष 1961 है। उपन्यास में खेतिहर मजदूरों की समस्याओं के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। ग्रामीण समाज के खेतिहर मजदूर और शहरी समाज के मजदूरों की समस्याओं को एक दृष्टि से देखकर चित्रण किया गया है।

ट) पानी के प्राचीर : रामदरश मिश्र

यह उपन्यास 1961 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास की कथावस्तु उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र में बसे 'पांडेपुरवा' नामक एक गांव की है। यह गाँव राप्ती, गर्रा आदि नदियों से घिरा हुआ है। गाँव के

किसानों की निर्धनता, उनका पिछड़ापन, आपसी कलह एवं किसानों का जमींदारों द्वारा शोषण आदि का चित्रण इस उपन्यास में मिलता है।

ठ) आधा गाँव : राही मासूम रजा

इस उपन्यास में देश विभाजन के पश्चात समाज की बदली हुई स्थिति का चित्रण है। 'आधा गाँव' उपन्यास 1966 में प्रकाशित हुआ। उपन्यास में उत्तर प्रदेश के एक गाँव के मुसलमान जमींदार और मध्यवर्गीय किसानों के आपसी संघर्ष को दिखाया गया है। उपन्यास में यह दर्शाया गया है कि जिस तरह से समाज में हिंदु किसान औपनिवेशिक शासन के अत्याचारों को झेल रहे हैं वैसे ही मुसलमान कृषक भी अंग्रेजों के अत्याचार को सहने को विवश हैं। उपन्यास में इस बात की तरफ खास ध्यान दिलाया गया है कि शोषण के रास्ते में जाँति-पाँति का कोई मतलब नहीं है।

ड) लोग : गिरिराज किशोर

यह उपन्यास 1966 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास की रचना की उस समय की है जब भारत में ब्रिटिश शासन का अंतिम दौर चल रहा था। उपन्यास में जमींदार वर्ग के अंत की कहानी है कि बदलते समय में जमींदार वर्ग किस तरह अपने अधिकारों से वंचित हो जाएगा। इस बात पर भी प्रकाश डाला गया है कि किस तरह से यह वर्ग ब्रिटिश शासन से वफादारी निभाने के बावजूद टूटन की स्थिति तक पहुँच गया है।

ढ) अलग-अलग वैतरणी : शिवप्रसाद सिंह

इस उपन्यास का प्रकाशन 1967 में हुआ। इस उपन्यास में आजादी के बाद भारतीय गाँव की बदतर जिंदगी का चित्रण है। देश तो आजाद हो गया किन्तु भारत वर्ष के गाँव की वही दशा है जो आजादी से पूर्व थी उनके सामने वही समस्याएं हैं उसी गरीबी और भुखमरी से वे आज भी जूझ रहे हैं और इन सबके जिम्मेदार गाँव के जमींदार हैं। गोपालराय के अनुसार-''जिसे निर्मित किया है भूतपूर्व जमींदार ने

धर्म तथा समाज के पुराने ठेकेदारों ने, भ्रष्ट सहकारी ओहदेदारों ने और इस वैतरणी में जूझ और छटपटा रही है गाँव की प्रगतिशील नयी पीढ़ी।''[15]

ण) जल टूटता हुआ : रामदरश मिश्र

यह उपन्यास एक तरह से 'पानी के प्राचीर' उपन्यास का विस्तार है। इस उपन्यास की रचना 1969 में हुई। यह उपन्यास उन किसानों की दयनीय स्थिति का उल्लेख करता है जो यह सपना देख रहा है कि आजादी के बाद उनकी स्थिति सुधर जायेगी। किन्तु इसके विपरीत होता यह है कि किसानों एवं मजदूरों का शोषण करने वाले जमींदार मंत्री या नेता के रूप में पुनः किसानों का शोषण करने लगते हैं। उपन्यास सुगन मास्टर कहते हैं- "इतने साल हो गये आजादी मिले हुए। यह अभागी जिन्दगी टस से मस नहीं हुई।"[16]

त) जुगलबन्दी : गिरिराज किशोर

यह उपन्यास 1973 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में दो जमींदार पीढ़ियों की कथा है जो पूरी तरह से अंग्रेजों के भक्त हैं। पहली पीढ़ी अंग्रेजी शासन के अनेक अपमान सहने के बावजूद वो उन्हीं के पदचिन्हों पर चलते हैं क्योंकि वे खुद को उन्हीं के रंग में ढालना चाहते हैं। जमींदारों की दूसरी पीढ़ी जो अंग्रेजों की वास्तविकता को जानती है इसलिए वह अपने आप को बदलने के लिए संघर्षरत हैं।

थ) गली आगे मुड़ती है : शिवप्रसाद सिंह

इस उपन्यास का प्रकाशन 1974 में हुआ। इसमें एक ऐसे किसान पुत्र की कहानी है जो अपने गाँव समाज से दूर काशी में अपना जीवनयापन कर रहा होता है। उपन्यास पढ़कर हमें यह पता चलता है कि किस तरह आज की नई पीढ़ी अपने घर-परिवार, जमीन से अपने आप को दूर करता जा रहा है। क्योंकि उन्हें खेती में अपना कोई भविष्य नहीं दिखाई देता है। इस उपन्यास का मूल पात्र रामानन्द तिवारी कहता है- "मजदूर और किसान के बाद छात्र को तीसरी शक्ति के रूप में देखना एक भ्रम मात्र है।''[17]

द) मुट्ठी भर काँकर : जगदीश चंद्र

इस उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 1976 है। उपन्यास की पृष्ठभूमि का आधार विस्थापित किसानों की त्रासदी है। देश विभाजन के पश्चात पंजाब से आए शरणार्थियों के कारण दिल्ली के आसपास के किसानों को अपनी जमीन से विस्थापित होना पड़ा। पंजाब से आये शरणार्थियों के आगे धीमी गति से चलने वाले किसान टिक नहीं पाए, उनकी जमीन उनसे छिन गई और उनके हाथ में रुपयों की गड्डियाँ आ गईं और वे भूमिहीन हो गए।

ध) लोकऋण : विवेकी राय

यह उपन्यास वर्ष 1977 में प्रकाशित हुआ। उपन्यास का केंद्र विंदु पूर्वांचल का एक आधुनिक गाँव है, आधुनिक गाँव इसलिए कि गाँव में आजादी के बाद चकबंदी हो चुकी है, गाँव वासियों के लिए बिजली की व्यवस्था की गई है। इन सबके बावजूद गाँव के किसान अभावग्रस्त जीवन जीने को मजबूर हैं। क्योंकि जमींदारों ने अपने फायदे के लिए गाँव की सारी उपजाऊ भूमि को हड़प लिया है, चकबंदी जैसी योजना का लाभ गाँव के छोटे किसानों को नहीं प्राप्त हुआ।

न) हवेलियों वाले : द्रोणवीर कोहली

इस उपन्यास का प्रकाशन 1980 में हुआ। उपन्यास के केंद्र बिंदु में मुसलमान किसान हैं। मुसलमान किसानों की भूमि पर हिंदु साहूकारों ने कब्ज़ा जमा रखा है। ग्रामीण समाज सामंती दृष्टिकोण पर आधारित है। हिंदु साहूकार किसानों का शोषण करते हैं, फलस्वरूप किसानों एवं साहूकारों के बीच समय-समय पर संघर्ष भी होता रहता है।

प) सोना माटी : विवेकी राय

यह उपन्यास भी पूर्वांचल के ही किसानों की कथा है। यह उपन्यास वर्ष 1983 में प्रकाशित हुआ। 'सोनामाटी' में वहाँ के गाँव की उपजाऊ भूमि का चित्रण है जहाँ की मिट्टी में सोना उगलने की क्षमता है

किन्तु समय-सयम पर बाढ़ द्वारा सब कुछ नष्ट हो जाता है। इस स्थिति पर किसानों की होने वाली दयनीय स्थिति का वर्णन इस उपन्यास में मिलता है। बड़े किसानों द्वारा छोटे किसानों एवं खेतिहर मजदूरों का शोषण होता है। उनके विकास के नाम पर चलने वाली योजनाएं एवं फसल नष्ट होने पर मिलने वाले मुआवजे आदि की राशि भी पीड़ित किसानों तक पहुँचने के बजाय भूमिपतियों एवं ठेकेदारों तक ही रह जाती है।

फ) घास गोदाम : जगदीश चंद्र

इस उपन्यास में भी दिल्ली के विस्थापित किसानों का दर्द दिखाई देता है। यह उपन्यास वर्ष 1985 में प्रकाशित हुआ। दिल्ली का विस्तार होने के कारण किसान अपनी जमीनें बेचने पर मजबूर हो गए। इसका परिणाम यह हुआ कि किसानों के हाथ में ढेर सारे पैसे तो आ गए किंतु नए कामों के प्रति प्रशिक्षित न होने से इनका जीवन कठिन हो गया। इस प्रकार किसान जमीन से भी वंचित हो गए और उनके पैसे भी धीरे-धीरे खत्म हो गए।

ब) मय्यादास की माड़ी : भीष्म साहनी

यह उपन्यास 1988 में रचा गया। उपन्यास में ईस्ट इंडिया कंपनी के अत्याचार और बढ़ते प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए,उस समय की जमींदारी व्यवस्था का चित्रण है जब देश पर अंग्रेजी शासन का अधिकार हो चुका था। जमींदारों का अत्याचार अपने चरम पर था ये वही देशी जमींदार थे, जो किसी भी कीमत पर अंग्रेजों के वफादार बनना चाहते थे। इसके लिए वो अपने ही देश के किसानों और मजदूरों का जमकर शोषण करते थे।

भ) समर शेष है : विवेकी राय

यह उपन्यास 1988 में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास 'सोनामाटी' उपन्यास की कथा को आगे बढ़ाता है। गोपालराय के अनुसार- ''समर शेष है' एक विक्षोभकारी विजन पर आधारित उपन्यास है।

इस विजन के केन्द्र में पूर्वांचल के किसान मजदूर हैं, जो लम्बे समय तक शोषण और अन्याय सहते रहने के बाद अब संघर्ष की मुद्रा में तनकर खड़े हो रहे हैं।''[18] इस उपन्यास में ऐसे गाँव की कथा है जिसके निवासी यह सपना देख रहे हैं कि स्वराज प्राप्ति के बाद गाँव का विकास होगा, स्वराज तो मिल जाता है लेकिन वह इस गाँव तक नहीं पहुँचता है। इस उपन्यास के किसान बुद्धिजीवी हैं जो अपने शोषण के खिलाफ आवाज उठाते हैं।

म) कालकथा : कामतानाथ

यह उपन्यास 1988 ई. में प्रकाशित हुआ। उपन्यास उत्तर-भारत के चंदनपुर नामक एक गाँव की कहानी को बयां करता है। उपन्यास में तत्कालीन समाज में जमींदारी व्यवस्था के समाप्त होने की कहानी है। उपन्यास में किसान एवं खेतिहर मजदूर की स्थिति एवं किसान आंदोलन की चर्चा भी दिखाई देती है। किंतु उस समय सत्ता पर विराजमान कांग्रेसी नेताओं का आंदोलन के प्रति सकारात्मक रवैया नहीं होता है।

य) डूब : वीरेन्द्र जैन

यह उपन्यास 1991 में प्रकाशित हुआ। उपन्यास में ठाकुरों और साहूकारों द्वारा गरीब किसानों के शोषण की कहानी है। डूब ऐसे किसानों की कहानी बयां करता है जिनकी जमीनें बाँध बनाने के लिए अधिग्रहित कर ली जाती हैं। किसानों को जबरन उनकी जमीन छोड़ने पर मजबूर किया जाता है। मुआवजे के नाम पर किसानों को ठगा जाता है। किसान भूमिहीन हो जाते हैं और मुवावजे की जो राशि उन्हें मिली थी वह भी जमींदारों ने अपने कर्ज वसूलने के नाम पर ले ली। न तो उनके पास पैसा बचा न ही जमीन। अरुण प्रकाश के अनुसार- "परियोजना में कृषि योग्य भूमि ले ली जाती है। लेकिन गाँव के रिहाइशी इलाके को छोड़ दिया जाता है। किसानों के पास पैसा आया तो साहूकारों ने अपने पुराने कर्ज वसूले और जा बसे जिला शहर ललितपुर, झांसी, बीना या भोपाल में। किसानों का पैसा धीरे-धीरे फुंक गया। फिर अपनी रिहाइशी जमीनों के मुआवजे के लिए बैठे रहे इंतजार में। उधर परियोजना के लिए पानी इकट्ठा कर

ऊंचाई पर पहुंचाना फिर नीचे की ओर गिरना। लड़ैई पर बाढ़ का निरंतर हमला होगा। कुछ साहूकार इस ताक में थे कि लोग गाँव छोड़कर भागें तो सस्ती जमीन खरीदकर सरकार से ऊँचा मुआवजा वसूला जाए।"[19]

र) बेदखल : कमलाकांत त्रिपाठी

यह उपन्यास 1997 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में किसानों एवं जमींदारों के बीच सीधा संघर्ष दिखाया गया है। किसानों और जमींदारों के बीच चल रहे आंदोलन में सरकार जमींदारों का साथ देती है। उपन्यास में एक तरफ कांग्रेसी नेता किसानों और मजदूरों को शांति की सीख देते हैं और दूसरी तरफ जमींदार उनका शोषण करते रहते हैं। उपन्यास में बीसवीं शताब्दी के दूसरे-तीसरे दशक में बाबा रामचंद के नेतृत्व में चल रहे किसान आंदोलन का सजीव वर्णन किया गया है।

2.1.3 इक्कीसवीं सदी के किसानी उपन्यास

हिंदी में किसान जीवन की समस्याओं पर जो उपन्यास लेखन की परंपरा स्वतंत्रता से पूर्व शुरू हुई वह हर युग में चलती रही। हर युग के किसान एवं खेतिहर मजदूर की समस्याएं अलग-अलग होते हुए भी एक दूसरे से जुड़ी हुई दिखाई देती हैं। किसान एवं खेतिहर मजदूर के जीवन की समस्याओं से समाज को जोड़े रखने के लिए ही इक्कीसवीं सदी के उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में किसान एवं खेतिहर मजदूरों को जगह दिया है।

क) जमीन : भीमसेन त्यागी

इस उपन्यास की रचना भीमसेन त्यागी ने 2004 में गरीब किसानों एवं मजदूरों के जीवन को आधार बनाकर की है। उपन्यास की शुरुआत आजादी से प्रारंभ होकर पं. जवाहरलाल नेहरु की मृत्यु पर समाप्त होता है। किसान एवं खेतिहर मजदूर जमींदारों के शोषण एवं अत्याचार से दबे हुए हैं। गाँव के जमींदार किसानों से बेगार करवाने के साथ-साथ उनके घर की स्त्रियों का शारीरिक शोषण भी करते हैं।

उपन्यास में 'जमींदारी उन्मूलन' कानून से लेकर 'भूदान' आंदोलन का उल्लेख भी मिलता है। किसान जमींदारों के शोषण एवं कर्ज से इस तरह बेहाल हैं कि वे जमींदारों को अपनी भूमि देने पर मजबूर हो जाते हैं। इस तरह से यह उपन्यास किसानों के भूमिहीन होने की प्रक्रिया को भी दर्शाता है।

ख) सल्तनत को सुनो गाँव वालो : जयनंदन

इस उपन्यास की रचना जयनंदन 2005 में खेती किसानी की समस्या को आधार बनाकर किया है। मंडी की समस्या को उपन्यास के प्रारंभ में ही दिखाया गया है। गाँव के किसानों ने ईख की खेती करना सिर्फ इसलिए बंद कर दिया कि सरकार द्वारा चीनी की मिल को बंद कर दिया गया है। गाँव की जमीन धान की पैदावार के लिए अनुकूल होते हुए भी पानी की कमी से किसानों के खेत सूख जाते हैं किंतु यह उपन्यास जमींदारी शोषण पर न आधारित होकर, कृषि के व्यवसायीकरण एवं युवाओं का कृषि में रोजगार के अवसरों दिलाने की कहानी पर आधारित है। सल्तनत और भैरव मिलकर गाँव के युवाओं में खेती के प्रति रूचि पैदा करने का काम कर रहे हैं। राजनीतिक भ्रष्टाचार उपन्यास में बखूबी निखारा गया है।

ग) हलफनामे : राजू शर्मा

यह उपन्यास किसान जीवन की त्रासदी पर आधारित है, जिसकी रचना 'राजू शर्मा' ने वर्ष 2007 में किया। उपन्यास की मूल समस्या पानी की कमी है। पानी की कमी के कारण ही उपन्यास का मुख्य पात्र स्वामीराम आत्महत्या कर लेता है। स्वामीराम की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र मकई मुआवजे की राशि के लिए कोर्ट के चक्कर लगाता है, तभी मकई को शासन तंत्र की सच्चाई का पता चलता है। उपन्यास में इस बात पर भी प्रकाश डाला गया है कि विभिन्न पदों पर बैठे अधिकारी किस तरह से किसानों का शोषण करते हैं।

घ) आखिरी छलांग : शिवमूर्ति

इस उपन्यास में शिवमूर्ति ने किसान जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है। एक किसान जिसको पहलवान नाम से जाना जाता है। वह अपनी समस्याओं से इस कदर घिर गया है उसे और कोई चीज दिखती ही नहीं, उपन्यास में किसानों के सामने पानी की समस्या, बीज की समस्या सामने दिखाई देती हैं। खेती में पर्याप्त आमदनी न होने के कारण किसान कर्ज के जाल में फंसे हुए हैं। किसान के सामने सिर्फ खेती-किसानी का संकट ही नहीं होता है बल्कि परिवार से जुड़े अन्य कार्यों के लिए कर्ज लेने पर वे मजबूर होते हैं।

ङ) कालीचाट : सुनील चतुर्वेदी

यह उपन्यास ऐसे किसानों की कहानी है जो लाख प्रयत्न करने के बावजूद अपनी समस्याओं को कम नहीं कर पाते हैं। युनुस नाम का किसान जो अपनी समस्याओं को दूर करने के लिए सरकार द्वारा चलाई गई नीतियों को अपनाता तो है, किंतु एक बार भी सफल नहीं होता है। अंत में मजबूर होकर आत्महत्या कर लेता है। उपन्यास में सरकारी नीतियों के दुष्प्रभाव को दिखाया गया है कि सरकार नीतियां तो चलाती तो है किंतु उनके प्रचार-प्रसार न होने के कारण किसान उन नीतियों में फंस जाते हैं। सुनील चतुर्वेदी ने औद्योगीकरण के प्रभाव को भी उपन्यास में दिखाया गया है। औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप गाँव के युवाओं का खेती से मोहभंग हो रहा है।

च) कंदील : राजकुमार राकेश

यह उपन्यास पहाड़ी किसान जीवन पर आधारित है। उपन्यास में राजकुमार राकेश ने पारबती नाम की महिला को केंद्र में रखकर किसानों की विविध समस्याओं से परिचय कराया है। कभी पानी की अधिकता से किसानों की फसलें खराब हो जाती हैं तो कभी सूखे की समस्या से किसान की फसलें सूख

जाती हैं। भूमि अधिग्रहण की समस्या और राजनेताओं के अत्याचार से किसान जूझ रहा है। इन सबके बावजूद किसान अपनी समस्याओं से हार नहीं मानता है वह उनसे संघर्ष करता है।

छ) अकाल में उत्सव : पंकज सुबीर

यह उपन्यास छोटे किसान की समस्याओं को आधार बनाकर लिखा गया है। रामप्रसाद नाम के किसान की संपूर्ण जीवन की समस्याओं को उपन्यास में बखूबी निखारा गया है। रामप्रसाद एक छोटा किसान है जिसकी जीविका का साधन सिर्फ खेती ही है। उसी के सहारे वह अपने पूरे परिवार का भरण-पोषण करता है किंतु बैंक के फर्जीवाड़े ने उसकी समस्याओं को और बढ़ाने का काम किया। बारिश से उसकी पूरी फसल नष्ट हो जाती है, अब उसके पास कर्ज चुकाने के लिए भी कुछ नहीं बचा है। नष्ट हुई फसल का मुआवजा प्राप्त करने के लिए उससे घूस की रकम माँगी जाती है। जब उसे कोई रास्ता नहीं दिखता तो वह हारकर आत्महत्या कर लेता है। उसकी आत्महत्या का कारण उसका पागल होना बताया जाता है। एक तरफ किसानों की फसलें नष्ट होने से किसान मातम मना रहे होते हैं दूसरी तरफ जिले में महोत्सव का आयोजन चल रहा होता है।

ज) आदिग्राम उपाख्यान : कुणाल सिंह

इस उपन्यास की मूल समस्या भूमि अधिग्रहण की है, जिसकी रचना कुणाल सिंह ने की है। किसानों की भूमि छीनने के लिए उनको तरह-तरह के प्रलोभन दिए जाते हैं। आदिग्राम की भूमि पर सरकार की तरफ से एक केमिकल फैक्ट्री लगाने का आदेश दिया जाता है अपनी भूमि बचाने के लिए किसान आंदोलन करते हैं। उपन्यास में ईस्ट इंडिया कंपनी के अत्याचार को भी दिखाया गया है। आदिग्राम के किसान भूखों मर रहे होते हैं फिर भी कंपनी उनसे लगान वसूलती है।

झ) तेरा संगी कोई नहीं : मिथिलेश्वेर

इस उपन्यास में बलेसर नाम के किसान को केंद्र में रखकर किसानों की समस्याओं से हमें अवगत कराया गया है। बलेसर के माध्यम से किसानों के भूमि प्रेम को भी दिखाया गया है। किसान गाँव में हजारों समस्याओं को झेलते हुए भी अपनी भूमि को छोड़ना नहीं चाहते हैं। बलेसर के बेटे उन्हें खेती छोड़ने के लिए तरह-तरह से विवश करते हैं किंतु बलेसर अपने फैसले पर अडिग रहते हैं। उनकी खेती उनकी मृत्यु के पश्चात ही छूटती है। उपन्यास में किसान आंदोलन पर भी प्रकाश डाला गया है। खेतिहर मजदूर के गाँव से शहर की तरफ पलायन के कारण को भी उपन्यास में दिखाया गया है।

ञ) फांस : संजीव

उपन्यास की रचना ने संजीव किसान आत्महत्याओं को केंद्र में रखकर किया है। उपन्यास की केंद्र भूमि विदर्भ के किसान हैं। विदर्भ की भूमि के किसान पानी की समस्या से त्रस्त हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कारण किसान परंपरागत कृषि छोड़ने पर मजबूर हो रहे हैं, जिसके परिणामस्वरुप छोटे किसान एवं खेतिहर मजदूरों के लिए खेती कठिन होती जा रही है। सरकारी नीतियों के कारण भी किसान कर्ज में डूब रहा है। सरकार द्वारा चलाई गई 'पशुपालन' एवं 'मुर्गीपालन' जैसी योजनाएं किसानों के लिए प्राणघातक सिद्ध हो रही हैं।

ट) यह गाँव बिकाऊ है : एम.एम.चंद्रा

इस उपन्यास में किसान एवं खेतिहर मजदूरों के जीवन के विविध पहलुओं से हमें अवगत कराया है। खेतिहर मजदूर काम की तलाश में गाँव से शहर जाता है और वहां भी काम न मिलने पर पुनः गाँव का ही रास्ता देखता है। यही स्थिति फतह की है वह गाँव से शहर काम की तलाश में गया था किंतु वहां भी फैक्ट्री बंद होने के कारण उसे पुनःगाँव लौटना पड़ता है। बल्ली के माध्यम से बड़े किसानों की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है।

ठ) बहुत लंबी राह : कर्मेंदु शिशिर

बिहार की पृष्ठभूमि को आधार बनाकर इस उपन्यास की रचना की गई है। इस उपन्यास की मूल समस्या गैर-मजरूआ भूमि की है। गैर-मजरूआ ऐसी भूमि होती है जिस पर सरकार का अधिकार होता है। किंतु जमींदारों ने अपने पैसे और रुतबे के दम पर उस पर कब्ज़ा कर लिया है । महतो ऐसे ही गैर-मजरूआ भूमि पर बसा है उसके बदले उसे गाँव के जमींदार मिसिर के यहाँ बेगार करनी पड़ती है, क्योंकि मिसिर ने ही महतो को उस जमीन पर बसाया है। महतो अपने पिता के जमाने से ही मिसिर के घर बेगार करता आ रहा है। महतो के बेटे विभूति ने मिसिर के तालाब से मछली क्या पकड़ ली, मिसिर ने उसकी पूरी जिंदगी ही बदल दी। महतो का पूरा परिवार छिन्न-भिन्न हो गया। जमींदारी शोषण की पराकाष्ठा उपन्यास में दिखाई देती है।

ड) हिडिम्ब : एस.आर.हरनोट

इस उपन्यास की रचना 2011 में पहाड़ी किसान को आधार बनाकर किया गया। शावणू नाम का एक किसान जो अपने परिवार की मदद से खेती करता है, उस पर शासन तंत्र की ऐसी कु-दृष्टि पड़ती है कि उसका पूरा परिवार बिखर जाता है। मंत्री को शावणू की भूमि पसंद आ जाती है, वह उसे हथियाने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपनाता है किंतु शावणू किसी भी कीमत पर अपनी जमीन मंत्री को देने को तैयार नहीं होता है। यहीं से शावणू के परिवार पर मंत्री द्वारा तरह-तरह के अत्याचार शुरु हो जाते हैं, यह अत्याचार तब तक चलता रहता है जब तक कि शावणू का पूरा परिवार समाप्त नहीं हो जाता।

ढ) चलती चाकी : सूर्यनाथ सिंह

2020 में रचित इस उपन्यास में खेतिहर मजदूर की मजदूरी संबंधी समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। खेतिहर मजदूर के काम संबंधी समस्या के साथ-साथ आधुनिक ढंग से कृषि करने पर जोर दिया

है। खेती के नए-नए तकनीकों एवं सिंचाई के नए तौर-तरीकों के बारे में भी जानकारी दी गई है। खेती में युवाओं की रुचि उत्पन्न करने के प्रयासों पर भी जोर दिया गया है।

ण) ताकि बची रहे हरियाली : अनंत कुमार सिंह

इस उपन्यास रचना 2015 में कृषि संस्कृति को आधार बनाकर की गई है। वैश्वीकरण की आंधी में जिस तरह से खेती करने के तौर-तरीकों में बदलाव हो रहा है, किसानों की समस्याएं भी बढ़ती जा रही है। एक तरफ बीज, खाद और कीटनाशक बनाने वाली कंपनियां हैं जिनका एकमात्र उद्देश्य होता है मुनाफा कमाना। दूसरी तरफ वे कृषि क्षेत्र से जुड़े हुए वे लोग जो किसानों की समस्याओं को कम करने के प्रयास में लगे होते हैं। उपन्यास में रासायनिक खादों के दुष्प्रभाव पर प्रमुख रूप से प्रकाश डाला गया है, साथ ही किसानों को जैविक खेती करने के लिए प्रेरित किया गया है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य के उपन्यास परम्परा में किसान जीवन की समस्याओं को लेकर उपन्यास प्रेमंचद पूर्व युग ये ही लिखे जाते रहे हैं। किन्तु उन्हें एक पुख्ता जमीन प्रेमचंद युग से ही मिली या यूं कह सकते हैं कि प्रेमचंद के आगमन ने ही हिन्दी उपन्यास को मानव जीवन की वास्तविक समस्याओं से जोड़ने का कार्य किया। मानव जीवन की अनेक समस्याओं में से प्रमुख रूप से किसान जीवन की समस्याओं को प्रेमचंद ने अपनी रचना का प्रमुख आधार बनाया और किसान और उनके जीवन की समस्याओं पर जो भी उपन्यास रचे जा रहे हैं प्रेमचंद आज भी उनके प्रेरणाश्रोत बने हुए हैं। आज इक्कीसवीं सदी में भी किसानों पर केन्द्रित उपन्यासों की रचना की जा रही हैं। किसान तो समस्याओं से आज भी जूझ ही रहा है हां उनके शोषण के तरीके बदल गए हैं।

संदर्भ

1. फॉक्स, रॉल्फ; उपन्यास और लोकजीवन; पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड, एम. एम. रोड़, नई दिल्ली; संस्करण: 1957; पृ. 7
2. शुक्ल, रामचन्द्र; हिन्दी साहित्य का इतिहास; लोकभारती प्रकाशन, 1.बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली 110002; संस्करण: 2015; पृ. 367
3. राय, गोपाल; हिन्दी उपन्यास का इतिहास; राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002; संस्करण: 2016; पृ. 124
4. वही, पृ. 105
5. वही, पृ. 110
6. चौधरी, सुरेन्द्र; साधारण की प्रतिज्ञा: अंधेरे से साक्षात्कार (सं.) उदयशंकर; अंतिका प्रकाशन सी- 56/ यूजीएफ-4, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-2, गाजियाबाद- 201005 (उ.प्र.); संस्करण: 2009; पृ. 20
7. वही, पृ. 18
8. मधुरेश; हिन्दी उपन्यास का विकास; राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियांगज, नई दिल्ली-110002; संस्करण: 2016; पृ. 38
9. सिंह, नामवर; प्रेमचंद और भारतीय समाज (सं.) आशीष त्रिपाठी; राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002; संस्करण: 2017; पृ. 124
10. शर्मा, रामविलास; प्रेमचंद और उनका युग; राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002; संस्करण: 2018; पृ. 84
11. मिश्र, रामदरश; हिन्दी उपन्यासः एक अन्तर्यात्रा; राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियांगज, नई दिल्ली- 110002; संस्करण: 2016; पृ. 56
12. शर्मा, रामविलास; प्रेमचंद और उनका युग; राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 110002; संस्करण: 2018; पृ. 98
13. राय, गोपाल; हिन्दी उपन्यास का इतिहास; राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002; संस्करण: 2016; पृ. 217
14. वही, पृ. 243
15. वही, पृ. 273
16. वही, पृ. 306
17. वही, पृ. 308
18. वही, पृ. 316
19. प्रकाश, अरुण; उपन्यास के रंग; अंतिका प्रकाशन, सी- 56/यूजीएफ- 4, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन- 2, गाजियाबाद-201005 (उ.प्र.); संस्करण: 2013; पृ. 77